समकालीन हिंदी उपन्यास - एक पारिस्थितिक पाठ

सुमा .एस*

आधुनिक युग का सबसे नाज़ुक और बहु चर्चित विषय है परिस्थिति और उससे सम्बंधित समस्याएं | आज धरती पर मनुष्य का अस्तित्व ही खतरे में पड गया है या यूं कहें कि मानव की दूरदर्शिता पर ही धरती पर जीवन का अस्तित्व टिका हुआ है| इसमें कोई संदेह नहीं कि इक्कीसवीं सदी में सबसे गंभीर चुनौती पर्यावरण का प्रदूषण है |

आधुनिक मानव के मन में अनेक आशाएं है ,अनगिनत सपने हैं जिन्हें पूरा करने के लिए वह बेतहाशा भाग रहा हैं | अपनी इस भाग दौड़ में जाने -अनजाने उनके हाथों प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हो रहा है | नतीजा , जल,थल,वायु और नभ सभी पर्यावरण के चंगुल में छटपटाते प्रतीत होते हैं | पर्यावरण प्रदूषण से मानव के जीवन और स्वास्थ्य बहुत ही खतरनाक स्थिति में हैं और यहाँ सबसे बड़ी सच्चाई यह हैं कि प्रदूषण रुपी इस राक्षस को जन्म देनेवाला खुद मनुष्य ही है | मनुष्य के इस दुष्कर्म का फल सिर्फ उसको ही नहीं पूरे प्राणी जगत को भुगतना पड रहा है |

भारतीय मनीषियों ने प्रकृति को सर्वप्रमुख माना था | हमारे प्राचीन साहित्य में भी पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण जैसे विषयों की चर्चा बार- बार की गयी है | हमारे पूर्वजों ने समस्त जीव-जगत को पर्यावरण से जोड़कर देखा | चरक संहिता में कहते हैं कि पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण ऋतुएं अपने शीत,ग्रीष्म ,वर्षा आदि धर्मों से च्युत होने लगेंगी,पृथ्वी का रस सूखने लगेंगे जिससे औषधीय पौधे वंचित होने लगेंगे|

* *Assistant Professor, Department of Hindi, Government Victoria College, Palakkad*
Email: sumajithkumar@gmail.com

भारतीय मनीषियों ने प्रकृति को सर्वप्रमुख माना था | हमारे प्राचीन साहित्य में भी पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण जैसे विषयों की चर्चा बार- बार की गयी है | हमारे पूर्वजों ने समस्त जीव-जगत को पर्यावरण से जोड़कर देखा | चरक संहिता में कहते हैं कि पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण ऋतुएं अपने शीत,ग्रीष्म ,वर्षा आदि धर्मों से च्युत होने लगेंगी,पृथ्वी का रस सूखने लगेंगे जिससे औषधीय पौधे वंचित होने लगेंगे|

विश्व के सभी साहित्यों में प्रकृति को वर्ण्य विषय बनाया गया है | दुनिया और समाज के सभी परिवरतनों को चित्रित करनेवाला सशक्त माध्यम साहित्य ही है | हिंदी साहित्य में १९५० से लेकर रचे गए आंचलिक उपन्यासों में एक अंचल के भौगिलिक ,सामजिक,सांस्कृतिक ,देशकाल,प्रकृति,धरती ,खेत -खलिहान,नदी -नाले आदि का वर्णन होता था | पर पर्यावरण या परिस्थिति से सम्बंधित विस्तृत पाठ या प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों का यथार्थ चित्रण उन उपन्यासों में नहीं पाया जाता | पर आधुनिक उपन्यासों में पर्यावरणीय संकट के विभिन्न आयामों को चित्रित करते दिखाई देते हैं | लगता है समकालीन साहित्य पूर्ण रूप से जागृत हो चुका है | देश व दुनिया के पर्यावरण में आये नकारात्मक बदलावों से वर्तमान लेखक चिंतित होने लगे हैं |

राजू शर्मा द्वारा रचित 'हलफनामे' मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिक जुड़ाव को सूक्ष्मता से प्रकट करनेवाला उपन्यास है | इसमें एक ऐसे बाप-बेटे की कहानी है जो अपने-अपने हुनर के अगाध ज्ञानी हैं | पिता स्वामीराम हड्डी तोड़ मेहनत करनेवाला किसान है | बेटा मकईराम खेती छोड़कर गाँव से बाहर एक कसबे में जाकर घर बसाता है और बिजली के काम -धंधे में जुड़ जाता है | उपन्यास में एक मुख्यमंत्री है जो अपने स्वार्थ के लिए बेचारे किसानों को मोहरा बनाता है |"किसान आत्महत्या योजना " के नाम से वह किसानों का रक्षक बन बैठता है | अचानक घटित स्वामीराम की मृत्यु मुख्यमंत्री के लिए एक सुअवसर प्रदान करती है | मकईराम को जान्कारी मिलती है कि कर्ज के बोझ से दबकर उसके पिता ने आत्महत्या कर ली थी| 'किसान आत्महत्या योजना ' के तहत मुआवजा पाने के लिया मकई हलफनामा दर्ज करता है| बाद में वकील के परामर्श से मकई कई हलफनामे दर्ज करता है | इन्हीं हलफनामों के चक्कर में मकई को अपने पिता की मृत्यु की असलीयत की जानकारी मिलती है | यह जानकारी उसके बर्दाश्त के बाहर था |

सवेरा गाँव का कृषक था मकई के पिता स्वामीराम |सवेरा में हमेशा पानी की तंगी लगी रहती थी |सूखे की वजह से सिंचाई के साधन बर्बाद थे | सरकार की योजनाओं ने इसका ठीक से उपाय नहीं किया | न नहरें साफ़ करवाई, न सरकारी ट्यूबवेल चलाये | बिजली ,खाद और बीज का भी इंतजाम भी दुरुस्त नहीं था | गांववालों की परेशानी से लाभ उठाने के लिए ठेकेदार आए | ठेकेदार लालाजी ने किसानों के लिए बोरवेल खोदने का वादा किया | उधार लेकर किसानों ने बोरवेल खुदवाया भी | पैसे की लालच से लालाजी ने एक की जगह चार-चार बोरवेल खुदवाए

जिससे धरती के अन्दर पानी का स्तर नीचा होने लगा जिसने मौसम पर भी नकारात्मक प्रभाव छोड़ा | सब कहीं सूखा फ़ैल गया | स्वामीराम को अपनी गलती का एहसास हुआ |उसने किसानों को ज्यादा बोरवेल न खुदवाने का उपदेश दिया जिससे वह लालाजी की आँखों का काँटा बन गया | स्वामीराम को चुप कराना उसके लिए ज़रूरी बन गया| इसी संघर्ष में स्वामीराम की मृत्यु हो जाती है |

पानी के लिए लोग कुआं बनाते हैं | पर धरती के अन्दर से पानी तब आयेगा जब पानी को वहां पहुँचने की इजाज़त हो | पानी का मार्ग बनाने के लिए ढलान को ठीक करना होगा | जो ढलान तालाब तक जाती थी उसे काट दिया गया ,वहां मकान बन गए ,सड़कें बन गईं |

'प्रकृति के हर आयाम का एक स्वाभाविक क्षेत्र होता है | जैसे बाघ के लिए जंगल को क्षेत्र मानते हैं ,उसी तरह पानी के होने ,उसके बहाव , ग्रहण ,निधि ,निवास और निर्गम का एक प्रांत होता है जिसे जल क्षेत्र या जल सांभर कहते हैं | जब इस क्षेत्र के साथ मनुष्य मनमानी करता है , छेड -छाड़ करता है तभी सूखा होता है या बाढ़ | सवेरा गाँव में हम यही देखते हैं | बारिश न हुई , सूखा फैला और किसान की खेती चौपट | अगर बारिश हो भी जाती है तो बाढ़ आ जाती है तब भी किसान बर्बाद हो जाते हैं |' हलफनामे में हम देखते हैं कि स्वामीराम जलचक्र का नक्शा बनाता है ,वह जल चक्र की बात आम जनता तक पहुंचाना चाहता था | आज मनुष्य जल चक्र के नियम भूल गए हैं | पानी की पैपें बिछी हुई हैं चारों ओर, नल खोला तो पानी ही पानी |लोग पानी के महत्व को भूलने लगे हैं | जो चीज़ आसानी से मिले उसकी चिंता ही क्यों करें | नतीजा , आज पानी की बूँद के लिए हम तरस रहे हैं | परिस्थिति ऐसी बदल गयी है कि आजकल मौसम हमेशा विकराल रूप में प्रत्यक्ष होता है | कभी महीनों तक पानी नहीं मिलता , अगर बारिश हो जाती है तो वह पानी जीवन दायिनी नहीं बल्कि जीवन नाशक बन जाता है | हलफनामे में लेखक ने यह भी दर्शाया है कि बाढ़ के नियंत्रण के लिए बाढ़ चौकियां स्थापित हो जाती हैं ,यहीं पर पहले सूखा रहत की चौकियां थी | मौसम की यह अचानक करवट वर्तमान पर्यावरण की एक प्रमुख समस्या है |

नासिरा शर्मा द्वारा रचित कुइयां जान में भी पानी की समस्या का मार्मिक चित्रण मिलता है | इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कोई केंद्र पात्र नहीं| लेखिका

ने जीवन के परम स्रोत जल की गाथा को बड़े ही सशक्त ढंग से कथानक के साथ जोड़ा है | उपन्यास की शुरुआत में हम देखते हैं कि मस्जिद के मौलाना की मृत्यु हो जाती है | दफ़न करने से पहले लाश को नहलाना है ,उसके लिए पानी की ज़रुरत है | मौलाना के साथ रहनेवाला अनाथ बदलू हर घर जाकर पानी की भीख मांगता है | पर कहीं से उसे पानी नहीं मिलता | आखिर खुर्शीद आरा के यहाँ से जहां बरसात का पानी जमा करनेवाली टंकी थी उसे पानी मिलता है | लेखिका ने उपन्यास में कई पात्रों के माध्यम से पानी के महत्व को समझाया है | उपन्यास का एक मुख्य पात्र है कमाल जो एक डाक्टर है | वह अपनी पत्नी सकीना के साथ मिलकर सूखे से पीड़ित लोगों का उपचार करते हैं | गंदे पानी से उत्पन्न बीमारियों का निवारण मार्ग ढूँढता है | रासायानिका पदार्थ के अत्याधिक प्रयोग से पीने के पानी गन्दा होता जा रहा है | ये रासायनिक पदार्थ मिट्टी में नीचे तक अपनी पैठ जमा लेते हैं और धरती के अन्दर पानी में खुलकर पानी को ज़हरीला बना देते हैं |

उपन्यास में एक ओर पात्र है मास्टरजी जो हर वक्त पानी को सहेजने और बचाने के उपाय के बारे में लोगों को बताते फिरते हैं | पर उनपर ध्यान देनेवाला कोई नहीं | पानी की संकट स्थिति को देखकर मास्टरजी भविष्य की सामाजिक स्थिति की कल्पना करते हुए कहते हैं -"खालिस दूध नहीं मिलता -यह शिकायत तो पुरानी हो चुकी है ,नयी शिकायत है खालिस पानी नहीं मिलता -देखने को , पीने को दूर ...खालिस शहद की तरह पानी भी लोग बोतल में बंद रखेंगे ,ताकि उसकी एक- एक बूँद सूखे के समय चाटकर हम अमृत का स्वाद ले सके | ऐसा दौर जल्द ही आनेवाला है जब हीरों का मोल पानी मिलेगा और पूंजीपति उसको अपनी तिजोरी में बंद रखेंगे | यह फैटसी नहीं बल्कि आनेवाले समय में पानी की दुर्लभता की पूर्व घोषणा है| यह मज़ाक नहीं बल्कि पानी के बढ़ते महत्त्व का सच है | यह अतिशयोक्ति नहीं भविष्य का यथार्थ है | सरकार तो एक तरफ वृक्षारोपण की बात करती है तो दूसरी तरफ जंगलों की अनैतिक रूप से कटाई की ओर से आँखें बंद किए हैं | पानी की कमी और पानी का दुरुपयोग, जल स्रोतों का नाश आदि बातों से आम जनता को अवबोध कराने के लिए डा .कमाल जगह-जगह संगोष्ठी का आयोजन करता है | इसी दौर में वह राजस्थान पहुंचता है | वहां के लोग पानी को सहेजने और संजोने के लिए जो नए उपाय ढूंढते हैं उसे देखकर कमाल दंग रह जाता है | माना कि मरुभूमि में पानी संजोकर रखना वहां के लोगों की ज़रुरत है ,मगर उस ज़रुरत को बड़े कलात्मक ढंग से निभाया है वहां के लोगों ने | उन लोगों ने वर्षा की बूंदों को बहुत ही सहज

ढंग से संजोकर पानी की अपनी ज़रुरत को पूरा करने की एक ऐसी भव्य परंपरा बना दी ,जिसकी जलधारा इतिहास से निकलकर वर्त्तमान तक बहती है और वर्त्तमान को भी इतिहास बनाने का वोज रखती है | जब हमें सहजरूप में पानी मिलता है तभी तो हम पानी के महत्व को नहीं समझ पाए |

मनुष्य ने धरती से पानी तो खूब लिया ,मगर उसे जो देना था वह नहीं दिया | धरती पर मनुष्य द्वारा हुए अत्याचार ही आज की दुर्दशा का मूल कारण है | इस दुर्दशा का फल बेचारे पशु-पक्षियों तक भुगतना पड रहा हैं | पीने के पानी के लिए ये प्राणी दर-दर भड़कते नज़र आते हैं | उपन्यास में बदलू एक ऐसा पात्र है जिसके दिल में इन प्राणियों के प्रति दया है,ममता है | खुर्शीदारा के घर में नौकरी करनेवाला बदलू वहां से मिले पैसे से दो हौज खरीदता है और उसमें पानी भरकर गाय -बकरियों को पिलाता है | वर्त्तमान दुनिया में ऐसे निस्वार्थी जन सचमुच ही एक चमत्कार है |

कुदरत ने मनुष्य को जो उपहार दिए हैं उसे मुफ्त का माल समझकर मनुष्य ने बेरहमी से पेश आया ,इस्तेमाल किया | घने जंगलों को काट दिया ,अनेक जीव जंतुओं को अपनी गोली का शिकार बनाया , ज़मीन के स्तनों को निचोड लिया और अपनी सत्ता दिखाने के लिए उस पर परमाणु बमों का प्रयोग किया | पर्वतों को तोड़कर ,उड़ाकर अपनी इच्छाएं पूरी की | वे हिम शिखर जिन्होंने अपने वजूद को पिघलाकर मनुष्य को नदियाँ दीं ,उन्हें मनुष्य ने बर्बाद किया | ये ही नदियाँ थीं जिनके किनारे आकर हम बस गए थे | आज हम उनसे मुंह मोड़ चुके हैं | सचमुच मनुष्य बड़े स्वार्थी बन गए हैं | पर आज वह अपने कारनामों से थक चुका है ,उसे सुकून की तलाश है | इसके लिए वह सुरक्षा व शान्ति की दुहाई तो दे रहा है मगर उसके लिए दिल नहीं खोल रहा है | वह बन्दूक उठाकर आतंक फैला रहा है ,शांती की खोज में अशांति फैला रहा है,सुरक्षा की चिंता में अधिक असुरक्षित हो रहा है , उन्नति की दीवानगी में पिछड रहा है |

फिर भी हमारी उम्मीद बंधी है स्वामीराम जैसे कृषकों पर जो धरती में जल-स्तर बनाए रखने की कोशिश कर रहा है ,कमाल और मास्टरजी जैसे समाज सेवियों पर जो जनता को जागृत करने का हरदम प्रयत्न कर रहे हैं | योजनायें बनाने मात्र से कोई लाभ नहीं ,उनके कार्यान्वयन पर भी ध्यान देना होगा | वरना ये योजनायें ,ये नारे ,ये चर्चाएँ कोरी हलफनामे बनकर रह जायेंगी |